

पैगोंग त्सो के आसपास बुनयािदी ढाँचे का विकास

प्रलिस के लयि:

भारत-चीन गतरिध, [पैगोंग त्सो झील](#), [वास्तवकि नयितरण रेखा](#)

मेन्स के लयि:

भारत-चीन सीमा पर बुनयािदी ढाँचे का विकास, भारत-चीन गतरिध की पृष्ठभूमि

चर्चा में क्यो?

[गलवान में भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच हसिक झड़प](#) के तीन वर्ष बाद भारत-चीन सीमा क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण बुनयािदी ढाँचे का विकास हो रहा है।

- गतरिध के बाद से दोनों पक्षों द्वारा बुनयािदी ढाँचे का विकास कया जा रहा है, जबकि दोनों [कोर कमांडर सत्र की वारता](#) के 19वें दौर का इंतजार कर रहे हैं ताकि क्षेत्र में उनके बीच ववाद का समाधान नकाला जा सके।

सीमा क्षेत्र के आसपास बुनयािदी ढाँचे का विकास:

- चीन द्वारा बुनयािदी ढाँचे के प्रयास:
 - उत्तर और दक्षण तट को जोड़ने वाले [पैगोंग त्सो पर एक पुल](#) का नरिमाण प्रगतपरि है।
 - चीनी पक्ष में शेडोंग गाँव की ओर सड़क संपर्क सहति बड़े पैमाने पर नरिमाण गतविधियाँ देखी गई हैं।
 - [G-0177 एक्सप्रेस-वे](#) के साथ 22 कमी. लंबी सुरंग का नरिमाण कया जा रहा है, जसि तबिबत में महत्त्वपूर्ण [G-216 राजमार्ग](#) से जोड़ा जाएगा।
- भारत की बुनयािदी ढाँचा परयोजनाएँ:
 - भारत पैगोंग त्सो के उत्तरी तट पर [फगिर 4](#) की ओर एक ब्लैक-टॉप सड़क का नरिमाण कर रहा है।
 - [सीमा सड़क संगठन \(BRO\)](#) सेला, नेचपु और सेला-छबरेला सुरंगों जैसी प्रमुख बुनयािदी ढाँचा परयोजनाओं को पूरा करने के नकिट है, जसिसे LAC के साथ हर मौसम में कनेक्टविटी सुनश्चिति होगी।
 - महत्त्वपूर्ण [दारबुक-शयोक-दौलत बेग ओलडी सड़क](#) के वैकल्पकि अक्ष पर नरिमाण कार्य सासेर ला के माध्यम से आगे बढ़ रहा है।
 - भारतीय सुरक्षा बलों की गतशीलता और सीमावर्ती क्षेत्रों की कनेक्टविटी में सुधार के लयि भारत-चीन सीमा सड़क (ICBR) योजना भी शुरु की गई थी। इसके तीन चरण हैं: ICBR-I (73 सड़कें), ICBR-II (104 सड़कें) और ICBR-III (37 सड़कें)।
 - BRO, जो कि ICBR का अधकिंश कार्य करता है, का पूंजीगत बजट वर्ष **2023-24** में **43% बढ़कर 5,000 करोड़ रुपए** हो गया है।
 - ICBR-III के अंतर्गत इनमें से **लगभग 70% सड़कें अरुणाचल प्रदेश में बनाई जाएंगी**।
 - [सेला सुरंग सड़क परयोजना](#) अरुणाचल प्रदेश को सड़कों के नेटवर्क के माध्यम से जोड़ने वाली सबसे प्रमुख परयोजना है। यह 13,000 फीट से अधकि ऊँचाई पर स्थति [वशिव की सबसे लंबी द्वा-लेन सुरंग](#) होगी।
 - [केंद्रीय बजट वर्ष 2022-23](#) में [केंद्र प्रायोजति योजना वाइब्रेंट वलिज प्रोग्राम](#) की घोषणा की गई थी।
 - इसका उद्देश्य चीन के साथ लगी सीमा पर गाँवों का व्यापक सत्र पर विकास करना, साथ ही चहिनति सीमावर्ती गाँवों में रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना है।
 - यह कार्यक्रम [हमाचल प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश](#) जैसे राज्यों में बुनयािदी ढाँचे में सुधार करेगा, साथ ही इसके अंतर्गत [आवासीय एवं पर्यटन केंद्रों का नरिमाण](#) कया जाएगा।

इन बुनयािदी ढाँचा विकास परयोजनाओं का नहितार्थ:

- सकारात्मक:

- उन्नत सीमा अवसंरचना से भारत की रक्षा क्षमताओं को मज़बूत करने के साथ ही सीमा पर गश्त और सुरक्षा क्षमता में सुधार होगा।
- बेहतर कनेक्टिविटी से स्थानीय समुदायों को लाभ होता है, क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिलता है तथा नए आर्थिक अवसर उत्पन्न होते हैं।
- बेहतर बुनियादी ढाँचा भारत को क्षेत्र में एक मज़बूत रणनीतिक स्थिति बनाए रखने की अनुमति देता है, जिससे संभावित रूप से चीन के किसी भी आक्रामक कदम को रोका जा सकता है।

■ नकारात्मक:

- बुनियादी ढाँचे का विकास मौजूदा सीमा विवादों में योगदान दे सकता है और तनाव बढ़ा सकता है।
- अन्य देशों के क्षेत्र में बेहतर कनेक्टिविटी और रक्षा क्षमताओं के चलते भारत और चीन दोनों के लिये चिंता उत्पन्न कर सकता है।
- भारत (या चीन) की दृढ़ता की धारणा द्विपक्षीय वार्ताओं और संबंधों को प्रभावित कर सकती है।

पैंगोंग त्सो झील:

■ विशेषता:

- पैंगोंग त्सो समुद्र तल से 14,000 फीट यानी 4350 मीटर से अधिक की ऊँचाई पर स्थिति 135 किलोमीटर लंबी और चारों ओर से स्थलों से घरी एक झील है।
- यह झील हिमनद के पघिलने से बनी है, इसमें चांग चेनमो शृंखला का पर्वतीय वसितार है, जिन्हें फगिरस कहा जाता है।
 - यह लवणीय जल से भरी विश्व की सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थिति झीलों में से एक है।
 - खारे जल की झील होने के बावजूद पैंगोंग त्सो पूरी तरह से जम जाती है।
 - इस क्षेत्र के खारे जल में सूक्ष्म वनस्पतिकाफी कम है।
 - सर्दियों के दौरान क्रस्टेशियंस को छोड़कर यहाँ कोई भी जलीय जीवन अथवा मछली नहीं पाई जाती है।
- पैंगोंग त्सो की लोकप्रियता का प्रमुख कारण इसका बदलता रंग है; इसका रंग नीले से हरे और लाल रंग में बदलता रहता है।

■ पैंगोंग त्सो के फगिरस:

- पैंगोंग त्सो पूर्वी लद्दाख में स्थिति बूमरंग आकार की अनोखी झील है, यह लगभग 135 किलोमीटर तक फैली हुई है।
- इस झील की विशेषता यहाँ के जल में कई पहाड़ी उभार हैं, जिन्हें "फगिरस" के नाम से जाना जाता है।
- पैंगोंग त्सो की फगिरस की संख्या 1 से 8 तक है, फगिर 1 झील के पूर्वी छोर के सबसे करीब है और फगिर 8 सबसे दूर है।
- भारत और चीन की वास्तविक नियंत्रण रेखा (दोनों देशों के बीच वास्तविक सीमा के रूप में कार्य करती है) के बारे में अलग-अलग धारणाएँ हैं



■ भारत और चीन का हिससा:

- पैंगोंग त्सो झील का लगभग एक-तहार्ई तथा दो-तहार्ई हिससा भारत और चीन के पास है।
- पैंगोंग त्सो का लगभग 45 किलोमीटर हिससा भारत के नियंत्रण में है। पैंगोंग त्सो का पूर्वी छोर तबिबत में स्थिति है।


■ पैंगोंग त्सो को लेकर सीमा विवाद:

- भारत फगिर 4 तक झील पर नियंत्रण का दावा करता है लेकिन उसका मानना है कि इसका क्षेत्र फगिर 8 तक फैला हुआ है।
 - उत्तरी तट दोनों देशों के बीच झड़प और तनाव का केंद्र रहा है जहाँ फगिरस स्थिति हैं।
- भारतीय सैनिक फगिर 3 के पास तैनात हैं, जबकि चीनी सैनिक फगिर 8 के पूर्वी बेस पर तैनात हैं जो फगिर 2 तक के क्षेत्र पर दावा करते हैं।

THE LINE OF ACTUAL CONTROL AT PANGONG TSO

1 Located at an altitude of 13,900 feet, two-thirds of the 134km-long lake is controlled by China as it extends from Tibet to India

2 India physically controls till Finger-4 (has a post between F3 and F4) but for decades has been patrolling west to east till Finger-8, where it says the LAC runs north to south



3 China has posts and bases at Finger-8, claims territory up to Finger-2

4 Since early May, PLA has blocked all Indian patrols beyond Finger-4 by occupying the 8km stretch between Finger-4 and Finger-8 by building fortifications and bunkers

स्रोत: द हिंदू